राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केंद्र, गाजियाबाद

नीमास्त्र

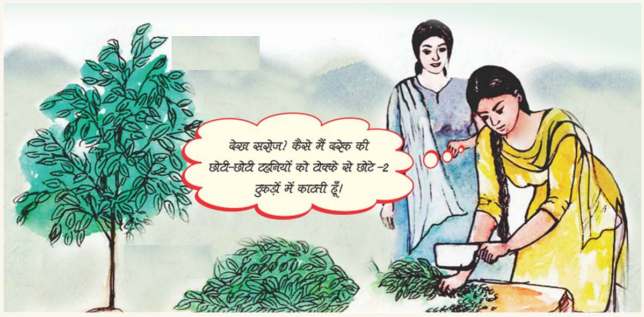

निर्माण की विधि

- नीम के पत्ते 5 कि. ग्रा.
- देसी गाय का मूत्र 5 लीटर
- पानी 100 लीटर

पांच किलो नीम की हरी पत्तियां लें या नीम के पांच किलो सूखे फल लें और पत्तियों को या फलों को कूट कर रखें। 100 लीटर पानी में यह कुटी हुई नीम या फल का पाउडर डालें। उसमें 5 लीटर गोमूत्र डालें और एक किलो देसीगाय कागोबर मिला लें। लकड़ी से उसे घोलें और ढककर 48 घंटे तक रखें। दिन में तीन बार घोलें और 48 घंटे के बाद उस घोल को कपडे से छान लें। अब फसल पर छिड़काव करें।

उपयोग : रस चूसने वाले कीट एवं छोटी सुंडी इल्लियों के नियन्त्रण हेतु।

ब्रह्मास्त्र

निर्माण की विधि

- नीम के पत्ते 3 कि. ग्रा.
- करंज के पत्ते 2 कि. ग्रा.
- सीताफल के पत्ते 2 कि. ग्रा.
- दतूरे के पत्ते 2 कि. ग्रा.
- देसी गाय का मूत्र 10 लीटर

10 लीटर गोमूत्र लें। उसमें 3 किलो नीम के पत्ते पीसकर डालें। उसमें 2 कि.ग्रा. करंज के पत्ते डालें। यदि करंज के पत्ते न मिलें तो 3 किलो की जगह 5 किलो नीम के पत्ते डालें,उसमें 2 किलो सीताफल के पत्ते पीसकर डालें। सफेद धतूरे के 2 कि.ग्रा. पत्ते भी पीसकर इसमें डालें। अब इस सारे मिश्रण को गोमूत्र में घोलें और ढक कर उबालें। 3-4 उबाल आने के बाद उसे आग से नीचे उतार लें। 48 घंटों तक उसे ठण्डा होने दें। बाद में उसे कपड़े से छान कर किसी बड़े बर्तन में भरकर रख लें। यह हो गया ब्रह्मास्त्र तयार। 100 लिटर पानी में 2-2.5 लिटर मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

उपयोग : कीडों, बड़ी सुन्डियों व इल्लियों के लिए।

अग्निअस्त्र

निर्माण की विधि

- देसी गाय का मूत्र 20 लीटर
- हरी मिर्च 0.5 कि. ग्रा.
- लहसुन 0.5 कि. ग्रा.
- नीम के पत्ते 5 कि. ग्रा.

20 लीटर गोमूत्र लें, उसमें आधा कि.ग्रा, हरी मिर्च कूटकर डालें। आधा किलो लहसुन पीसकर डालें। नीम के 5 कि.ग्रा. पत्ते पीसकर डालें तथा लकड़ी के डंडे से घोलें और उसे एकबर्तन में उबालें। 4-5 उबाल आने पर उतार लें। 48 घंटे तक ठन्डा होने दें। 48 घंटे के बाद उस घोल को कपडे से छानकर एकबर्तन में रखें। 100 लीटर पानी में 2-2.5 लीटर डालकर फसलपर छिड़काव करें।

उपयोग : पेड़ के तानों या डंठलों में रहनेवाले कीडे, फलियों में रहने वाली सुंडियों, फलों में रहने वाली सुंडियों, कपास के टिण्डों में रहने बाली सुंडियों तथा सभी प्रकारकी बड़ी सुंडियों व इल्लियों के लिए।

दशपर्णी अर्क

दशपर्णी अर्क का निर्माण

एक ड्रम या मिट्टी के बर्तन में 200 लीटर पानी लें। उसमें 10 लीटर गोमूत्र डालें। 2 कि.ग्रा. देसीगाय का गोबर डालें और अच्छी तरह से घोलें। बाद में उसमें 5 कि.ग्रा. नीम की छोटी-छोटी डालियां टुकड़े करके डालें और 2 कि.ग्रा. शरीफा के पत्ते, 2 कि.ग्रा, करंज के पत्ते, 2 कि.ग्रा. अरंडी के पत्ते, 2 कि.ग्रा. धतूरे के पत्ते, 2 कि.ग्रा. बेल के पत्ते, 2 कि.ग्रा. मढार के पत्ते, 2 कि.ग्रा. बेर के पत्ते, 2 कि.ग्रा, पपीते के पत्ते, 2 कि.ग्रा. बबूल के पत्ते, 2 कि.ग्रा. अमरूद के पत्ते, 2 कि.ग्रा. जांसबद के पत्ते, 2कि.ग्रा. तरोटे के पत्ते, 2 कि.ग्रा. बावची के पत्ते, 2 कि.ग्रा. आमके पत्ते, 2 कि.ग्रा. कनेर के पत्ते, 2 कि.ग्रा. देसी करेले के पत्ते, 2 कि.ग्रा. गेंदे के पौधों के टुकड़े डालें। उपरोक्त वनस्पतियों में से कोई दस से कोई दस वनस्पति डालें। यदि आपके क्षेत्र में अन्य औषधयुक्त वनस्पतियों की जानकारी है, तब उसकी भी 2 किग्रा. पत्तियां लें। सभी प्रकार की वनस्पतियों को डालने की आवश्यकता नहीं। बादमें उसमें आधा से एक किलों तक खाने का तम्बाकू डालें औरआधा किलो तीखी चटनी डालें। तदनन्तर उसमें 200 ग्राम सोंठ कापाउडर व 500 ग्राम हल्दी का पाउडर डालें। अब इनकों लकड़ीसे अच्छी तरह घोलें। दिन में दो बार सुबह-शाम लकडी से घोलनाहै, घोल को छाया में रखें। इसे वर्षा के जल और सूर्य की रोशनीसे बचाएं। इसको 40 दिन तैयार होने में लगते हैं। 40 दिन में दवा तैयार हो जाएगी, बाद में इसे कपड़े से छान लें और ढककर रखलें। इसे छह महीने तक रख सकते हैं। 200 लीटर पानी में यह 5से 6लीटर दशपर्णी अर्क कहीं भी कीट नियंत्रण के लिए छिड़कें।यह बहुत ही आसान और असरदार है।

किसी भी फसल या फलदार वृक्षों पर कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव करने के लिए घर बैठे कम लागत से दवा बनाएं।

उपयोग : सभी प्रकार के रसचूसक किट औरसभी इल्लियों के नियन्त्रण के लिए।